जलविज्ञान एवं जल संसाधन के क्षेत्र में एक विशिष्ट पुस्तकालय

प्रदीप कुमार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान , रूड़की

संस्थान का परिचय

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान , जल संसाधन मंत्रालय के अधीन भारत सरकार की एक समिति है जिसकी स्थापना " समिति पंजीकरण अधिनियम 1960 " के अंतर्गत पूर्णतया वित्तीय सहायता प्राप्त संस्थान के रूप में दिसंबर , 1978 में रूड़की में हुई । यह एक राष्ट्रीय अनुसंधान संगठन है और इसे मूलभूत , सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक जलविज्ञान में सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अनुसंधान गतिविधियों को संपन्न करने का कार्यभार सौंपा हुआ है । जलविज्ञान एवं जल संसाधनों के कार्य के लिए संस्थान ने लगभग 31 वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है । वर्तमान में संस्थान के छः क्षेत्रीय केन्द्र देश के विभिन्न राज्यों में कार्य कर रहे हैं ।

पुस्तकालय का परिचय एवं इसकी स्थापना

समाज के चौतरफा विकास में पुस्तकालयों का महत्वपूर्ण योगदान है । पुस्तकालय विश्व के सर्वोत्तम विचारों को पढ़ने व जानने का सबसे सरल माध्यम है । पुस्तकालय सूचना व शिक्षा के प्रचार-प्रसार का भी प्रभावशाली माध्यम है । पुस्तकालय मनुष्यों को बौद्धिक व सांस्कृतिक ज्ञान देकर उन्हें व्यावहारिक रूप से जीने की प्रेरणा देते हैं । आज के लोकतांत्रिक परिवेश में पुस्तकों व पुस्तकालयों को सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति की दृष्टि से देखा जाता है ।

शोध संस्थानों में पुस्तकालयों का महत्व और भी बढ़ जाता है । पुस्तकालय वास्तव में संस्थान का हृदय होता है । अच्छे पुस्तकालय के अभाव में संस्थान का विकास संभव नहीं है । शोध संस्थान के लिए पुस्तकालय उसकी रीढ़ की हड्डी होती है क्योंकि बिना पुस्तकालय के किसी शोध कार्य या प्रोजेक्ट के लिए आंकड़े इकट्ठा करना संभव नहीं है ।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर संस्थान के योजनाकर्ताओं ने वर्ष 1979 में अपना तकनीकी पुस्तकालय स्थापित किया जो कि पिछले 30 वर्षों मे जलविज्ञान एवं जल संसाधन के क्षेत्र में एक विशष्ट पुस्तकालय बनकर संस्थान के विकास में सहयोग दे रहा है ।

पुस्तकालय सलाहकार समिति

पुस्तकालय की स्थापना एवं विकास में पुस्तकालय सलाहकार समिति का विशेष योगदान है । इस समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों के नाम को संस्थान के निदेशक नामित करते हैं । यह समिति समय-समय पर बैठक कर पुस्तकालय में नई पुस्तकों , नए जर्नल्स , मानचित्र जो कि संस्थान के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों द्वारा चिन्हित किए गए हों , का विश्लेषण कर अपनी रिपोर्ट निदेशक महेदय को अनुमोदन हेतू प्रस्तुत करती है ।

पुस्तकालय संग्रह का विकास

संस्थान के पुस्तकालय संग्रह का विकास सारणी-। से स्पष्ट है जो कि हर वर्ष प्रगति पर है । वर्ष 1978-79 में अपने स्थापना वर्ष में पुस्तकालय में मात्र 24 पुस्तकों का संग्रह था । यह संग्रह दस वर्ष बाद वर्ष 1988-89 में 12080 हुआ जिसमें 5031 पुस्तकें , 336 जिल्दबंद जर्नल्स , 442 कम्प्यूटर मैनुअल्स , 3060 तकनीकी प्रतिवेदन तथा 3211 अन्य अध्ययन सामग्री शामिल हुई तथा 20 वर्षों बाद यह संग्रह वर्ष 1998-99 में 18,879 तक पहुँच गया। जिसमें 9450 पुस्तकें,1425 जिल्दबंद जर्नल्स एवं 4243 तकनीकी प्रतिवेदन तथा 3761 अन्य अध्ययन सामग्री थी । और अपनी स्थापना के 30 वर्षों के सुहावने सफर में पुस्तकालय संग्रह वर्ष 2008-09 में कुल संख्या 22,694 हो गयी है जिनमें 10,876 पुस्तकें , 2925 जिल्दबंद जर्नल्स , 442 कम्प्यूटर मैनुअल्स , 5076 तकनीकी प्रतिवेदन , 41 माइक्रोफिचेज़ , 306 भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानक , 1036 रिप्रिंट/पेपेर तथा 2001 मानचित्र शामिल हैं ।

पुस्तकालय के संग्रह में जलविज्ञान एवं जल संसाधन के विभिन्न विषयों की तकनीकी पुस्तकें हिंदी में , कहानियों एवं कविताओं की पुस्तकें एवं धार्मिक ग्रन्थ मूल भाषा में शामिल हैं ।

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्रों के पुस्तकालयों को वर्ष 1991 में स्थापित किया गया तथा जहाँ पर 1842 पुस्तके , मुख्यालय से भेजी जा चुकी हैं ।

सारणी -।

वर्ष	पुस्तकें	जिल्दबंद जर्नल्स	कम्प्यूटर मैनुअल्स	तकनीकी प्रतिवेदन	भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानक	रिप्रिंट/ पेपर	मान चित्र	माइक्रो-फिचेज	प्रलेखों की कुल संख्या	प्रलेखों की संचयी संख्या
1978-1979	24	-	-	-	-	-	-	-	24	24
1979-1980	178	-	-	13	-	-	-	-	191	215
1980-1981	190	-	-	487	-	-	40	-	717	932
1981-1982	550	-	-	269	81	488	24	20	1432	2364
1982-1983	857	82	252	281	-	230	310	8	2020	4384
1983-1984	946	54	58	204	-	157	250	1	1670	6054
1984-1985	374	-	5	164	101	36	30	1	711	6765
1985-1986	549	100	97	776	45	17	1013	-	2597	9362
1986-1987	268	-	30	369	20	6	251	11	955	10317
1987-1988	606	100	-	376	-	13	28	-	1123	11440
1988-1989	489	-	-	121	1	10	19	-	640	12080

1989-1990	385	-	-	68	-	1	10	-	464	12544
1990-1991	330	50	-	38	-	17	-	-	435	12979
1991-1992	947	-	-	36	-	-	-	-	983	13962
1992-1993	532	-	-	42	5	-	-	-	579	14541
1993-1994	413	-	-	425	-	1	-	-	839	15380
1994-1995	609	-	-	48	52	-	-	-	709	16089
1995-1996	271	1039	-	332	-	5	-	-	1647	17736
1996-1997	346	-	-	19	-	16	-	-	381	18117
1997-1998	412	-	-	20	1	-	-	-	433	18550
1998-1999	174	-	-	155	-	-	-	-	329	18879
1999-2000	67	-	-	160	-	-	-	-	227	19106
2000-2001	36	-	-	-	-	-	-	-	36	19142
2001-2002	88	-	-	36	-	-	-	-	124	19266
2002-2003	243	-	-	95	-	-	26	-	364	19630
2003-2004	262	-	-	-	-	-	-	-	262	19892
2004-2005	141	500	-	118	-	39	-	-	798	20690
2005-2006	133	-	-	200	-	-	-	-	333	21023
2006-2007	230	500	-	143	-	-	-	-	873	21896
2007-2008	104	200	-	28	-	-	-	-	332	22228
2008-2009	113	300	-	53	-	-	-	-	466	**22694**
	10867	2925	442	5076	306	1036	2001	41	**22694**	

पुस्तकालय में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल्स की स्थिति

शोध संस्थान के पुस्तकालयों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स का मुख्य स्थान है । शोध संस्थान के पुस्तकालय जर्नल्स के बिना अपूर्ण है । क्योंकि शोध कार्य करने के लिए जर्नल एक प्राथमिक सूचना देने वाला स्त्रोत है यह निश्चित विषय पर सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं । संस्थान के पुस्तकालय में जलविज्ञान एवं जल संसाधन के विभिन्न जर्नल्स का भण्डार है । सारणी-2 वर्षवार पुस्तकालय में जर्नल्स की स्थिति को स्पष्ट करती है । वर्ष 1980 में पुस्तकालय ने कुल 28 जर्नल्स प्राप्त किए जिनमें 9 राष्ट्रीय तथा 19 अंतर्राष्ट्रीय थे । वर्ष 1990 में कुल 75 जर्नल्स जिनमें 29 राष्ट्रीय तथा 46 अंतर्राष्ट्री प्राप्त हुए । वर्ष 2000 में 49 जर्नल्स जिनमें 21 राष्ट्रीय तथा 28 अंतर्राष्ट्रीय थे । तथा वर्तमान वर्ष 2009 में पुस्तकालय में

43 जर्नल्स प्राप्त हो रहे हैं जिसमें 19 राष्ट्रीय तथा 24 अंतर्राष्ट्रीय हैं । इनमें 06 जर्नल्स ऑनलाइन भी प्राप्त हो रहे हैं ।

संस्थान पुस्तकालय में जल संसाधन से संबंधित निम्नलिखित जर्नल्स वर्ष 1980 से लगातार अभिदत्त किए जा रहे हैं :-

1. Advances in.Water Resources
2. Hydrological Sciences Journal
3. Journal of Hydrology
4. ASCE: Jl of Hydraulic Engineering
5. ASCE:- Jl of Irrigation and Drainage Engineering
6. ASCE : Jl of Water Resources Planning and Management
7. Nordic Hydrology (अब Hydrology Research)
8. Water Resources Bulletin (अब JAWRA)
9. Water Resources Research
10. WMO Bulletin

संस्थान में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुस्तकालय में छः हिंदी की पत्रिकाएं भी अभिदत्त की जा रही हैं।

क्र.सं.	वर्ष	भारतीय पत्रिका	अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका	योग	क्र.सं.	वर्ष	भारतीय पत्रिका	अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका	योग
1.	1980	9	19	**28**	16.	1995	24	35	**59**
2.	1981	10	18	**28**	17.	1996	26	27	**53**
3.	1982	14	18	**32**	18.	1997	23	28	**51**
4.	1983	12	23	**35**	19.	1998	23	28	**51**
5.	1984	14	24	**38**	20.	1999	18	27	**45**
6.	1985	17	25	**42**	21.	2000	21	28	**49**
7.	1986	20	21	**41**	22.	2001	14	27	**41**
8.	1987	25	29	**54**	23.	2002	11	28	**39**
9.	1988	35	42	**77**	24.	2003	11	21	**32**
10.	1989	34	44	**78**	25.	2004	14	25	**39**
11.	1990	29	46	**75**	26.	2005	15	26	**41**
12.	1991	33	46	**79**	27.	2006	22	28	**50**
13.	1992	36	48	**84**	28.	2007	21	25	**46**
14.	1993	31	41	**72**	29.	2008	20	23	**43**
15.	1994	28	35	**63**	30.	2009	19	24	**43**

पुस्तकालय की वित्तीय स्थिति

पुस्तकालय सेवा को गतिशील रखने के लिए सुदृढ़ वित्तीय व्यवस्था की आवश्यकता होती है । अतः स्थायी आधार पर पुस्तकालय की स्थापना तथा अनुरक्षण के उपरांत अच्छी व संतोषप्रद पुस्तकालय सेवा के लिए धन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है । यदि पुस्तकालय की आय विश्वसनीय तथा अच्छी नहीं होगी तो पुस्तकालय अपने कार्य व उत्तरदायित्व को पूर्ण नहीं कर सकेगा और न ही सेवा सुचारू रूप से प्रदान कर सकेगा ।

संस्थान का पुस्तकालय भी इस बात से अछूता नहीं है क्योंकि वित्त की आवश्यकता पुस्तकें क्रय करने , जर्नल्स की अग्रिम राशि भेजने तथा अन्य अध्ययन सामग्री खरीदने के लिए पड़ती है । संस्थान पुस्तकालय के वित्तीय आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि अपने स्थापना वर्ष 1978-79 में पुस्तकालय का कुल बजट मात्र 10,038.73 था । दस वर्ष के बाद यह बजट वर्ष 1988-89 में 2,79,297.57, बीस वर्ष के बाद 1998-99 में यह बजट रू0 10,65,101.28 हो गया तथा वर्ष 2007-08 में यह आंकड़ा रू0 18,35,132.00 तक पहुँच गया है ।

पुस्तकालय द्वारा प्रदत्त सेवाएं

भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ. एस.आर.रंगनाथन ने पुस्तकालय विज्ञान के पांच सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिनमें दो प्रथम व द्वितीय इस प्रकार है -

(1) पुस्तकें उपयोग के लिए हैं ।

(2) पुस्तकें सबके लिए हैं ।

संस्थान का पुस्तकालय इन सिद्धांतों का भली-भाँति पालन करता है क्योंकि ज्ञान और सूचना की जानकारी पुस्तकालय से ही प्राप्त की जा सकती है क्योंकि पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार के पाठक अनेकों प्रकार की जिज्ञासा लेकर आते हैं और उन्हें उनके विषय से संबंधित सभी जानकारियां कम समय में उपलब्ध कराना ही पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य है ।

संस्थान का पुस्तकालय इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी अध्ययन सामग्री को एक अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण विधि U D C- Universal Decimal Classification Scheme द्वारा वर्गीकृत कर उन्हें एक अंतर्राष्ट्रीय सूचीकरण विधि - AACR-2-Anglo American Cataloging Rules-2 के अनुसार शैल्फ में रखता है जहाँ पर Open Access System होने के कारण हर प्रकार का पाठक प्रत्येक सामग्री तक आसानी से पहुँच जाता है ।

संस्थान के सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारयों को पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए कार्ड दिए गए हैं जो कार्डों पर अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तके प्राप्त करते हैं । पुस्तकालय में एक आधुनिक फोटोकॉपी मशीन है जिससे पाठक अपनी आवश्यक सामग्री की फोटोकॉपी कराते हैं । क्षेत्रीय केंद्रों के वैज्ञानिक एवं कर्मचारी भी अपने क्षेत्र से संबंधित पुस्तकों , जर्नल्स एवं तकनीकी प्रतिवेदनों से माँगपत्र भेजकर फोटोकॉपी की सुविधा का लाभ उठाते हैं ।

संस्थान के पुस्तकालय का जलविज्ञान एवं जल संसाधन के क्षेत्र में एक विशिष्ट पुस्तकालय होने के कारण इसका उपयोग रूड़की शहर में स्थित अन्य संस्थान जैसे सिंचाई

अनुसंधान संस्थान , सिंचाई परिकल्प संगठन , भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान , आदि भी करते हैं।

पुस्तकालय सहकारिता

दो या दो से अधिक पुस्तकालयों द्वारा संग्रह , तकनीकी कार्यक्रम तथा सेवाओं में एक-दूसरे से सहयोग को पुस्तकालय सहकारिता कहा जाता है । सहयोग के इस कार्यक्रम में प्रत्येक सदस्य पुस्तकालय एक दूसरे को कुछ देने को तैयार रहता है तथा सहयोग के कार्यक्रम में या सेवाओं में लगने वाला समय , श्रम तथा धन का भार सम्मिलित रूप से वहन करता है । पुस्तकालयों के बीच स्त्रोत साझेदारी को Resource Sharing among Libraries कहा जाता है ।

पुस्तकालय आपस में अर्न्तपुस्तकालय उधार विधि अपनाकर अपने पुस्तकालय से दूसरे पुस्तकालय को उनकी माँग के अनुसार पुस्तकें उधार दे सकते हैं और उनसे अपने पुस्तकालय में असंग्रहीत पुस्तकों को उन पुस्तकालयों से अपने पाठकों के लिए उधार मंगा सकते हैं । इस सहयोग का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है इससे पुस्तकालय का उपयोग भी बढ़ता है ।

रूड़की शहर में कई शोध संस्थान हैं जो जलविज्ञान एवं जल संसाधन के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं । जहाँ से उपयोगकर्ता आकर संस्थान के पुस्तकालय का उपयोग करते हैं । संस्थान पुस्तकालय ने सहयोग की भावना को ध्यान में रखकर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रूड़की के जलविज्ञान विभाग को स्थायी रूप से कार्ड निर्गत किए हैं जो कि लगभग 100 पुस्तकें हर वर्ष पुस्तकालय से प्राप्त करते हैं ।

पुस्तकालय सेवा में कर्मचारियों का योगदान

पुस्तकालयों को स्वर्गतुल्य स्थान , ज्ञान का मन्दिर , संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों का हृदय आदि कई विशेषणों से विभूषित किया गया है । पुस्तकालय सेवा एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें कुछ देकर या सेवा कर आनंद का अनुभव होता है । डॉ. एस.आर.रंगनाथन ने पुस्तकालय कर्मियों के निम्न उद्देश्य बताए हैं -

(1) व्यक्तिगत लाभ (2) समाज कल्याण
(3) सृजनात्मक तथा विरेचनात्मक आनंद (4) देशीय धर्म ।

अतः पुस्तकालय की सेवाओं को पूरा करने में पुस्तकालय कर्मियों की अहम् भूमिका होती है क्योंकि पुस्तकालय तंत्र को ठीक प्रकार से चलाने का कार्य पुस्तकालय कर्मियों की

जिम्मेवारी है । संस्थान के पुस्तकालय कर्मी पुस्तकालय की सेवा में पूर्ण रूप से सहयोग कर अपने उपभोगकर्ताओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं ।

पुस्तकालय में कम्प्यूटरीकरण

" कम्प्यूटर का आविष्कार इसलिए किया गया क्योंकि इसकी आवश्यकता थी ,यह प्रयोग में इसलिए है क्योंकि इसकी अनिवार्यता है तथा यह प्रयोग में रहेगा क्योंकि यह एक अपरिहार्य बन चुका है " पुस्तकालयों में कम्प्यूटर का प्रयोग करना एक प्रकार की अनिवार्यता बन चुकी है । कम्प्यूटरीकरण का अर्थ उन पारम्परिक पुस्तकालय कार्य-कलापों से है जैसे- पुस्तक चयन एवं संग्रहण , परिग्रहण , परिचालन ,अनुक्रमणिका नियंत्रण , चालू जानकारी सेवाएं , ऑन-लाइन सूचना , पुर्नप्राप्ति आदि के तकनीकी प्रक्रमण का यंत्रीकरण है । कम्पयूटरों की वजह से अब कम से कम खर्च पर कम से कम समय में अत्यधिक मात्रा में आंकड़ों का भण्डारण एवं प्राप्ति संभव हो गया है ।

आज भारतीय पुस्तकालय तेजी से कम्प्यूटरीकरण की विधि को अपना रहे हैं । संस्थान के पुस्तकालय ने भी आधुनिक सूचना तकनीकी को ग्रहण कर लिया है । संस्थान के पुस्तकालय नई दिलली तथा उत्तराखण्ड के अत्यन्त आधुनिक कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालयों का सर्वेक्षण कर अपने सूचना स्त्रोतों को भी अत्यन्त आधुनिक रूप से कम्प्यूटरीकृत करने की योजना बनाई है जिसका प्रस्ताव संस्थान पुस्तकालय समिति के पास विचाराधीन है । आशा की जाती है कि जल्दी ही संस्थान पुस्तकालय में भी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित सभी सेवाएं तथा आन्तरिक कम्प्यूटरीकृत सेवाएं उपलब्ध हो जाएंगी ।

भावी योजना

निकट भविष्य में संस्थान के पुस्तकालय को एक जलविज्ञानीय सूचना तंत्र के रूप में विकसित करने तथा इन्टरनेट से जोड़ने की योजना है जिससे देश के अन्य जलविज्ञान से संबंधित संस्थान भी इसके संसाधनों का पूर्ण लाभ उठा सकें और देश की जल संबंधी समस्याओं का निराकरण करने में इस पुस्तकलय में उपलब्ध सूचनाओं का और अधिक उपयोग हो सके ।

निष्कर्ष

संस्थान के पुस्तकालय ने पिछले 31 वर्षों में काफी उन्नति की है तथा जलविज्ञान एवं जल संसाधन में अनुसंधान के लिए समयबद्ध आवश्यक सूचना सेवा उपलब्ध कराने की ख्याति प्राप्त की है । जलविज्ञान एवं जल संसाधन से संबंधित विषयों में प्रलेखों के द्वारा सभी स्तर की सूचना उपलब्ध कराकर इस क्षेत्र के विशिष्ट पुस्तकालयों में अपना नाम दर्ज किया है । मैं

इसके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि देश के विकास में यह पुस्तकालय इसी प्रकार योगदान देता रहेगा ।

आभार-

श्री मुहम्मद फुरकान उल्लाह ,सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी ,रा.ज.सं. ,रूड़की!